पुत्र की परीक्षाएं

एँडी क्लोर

अपने प्रभु के बपतिस्मे के बाद की घटनाएं हमें हैरान कर देती हैं। हमें यह पढ़ने की अपेक्षा है कि वह बपतिस्मा लेने के तुरन्त बाद उपदेश देने की अपनी सेवकाई में लग गया होगा, परन्तु ऐसा हुआ नहीं। इसके बजाय, वह नासरत से अधिक एकांत में चला गया था। जंगल उसका घर बन गया था और जंगली जानवर उसके साथी (मरकुस 1:12, 13)। इस एकांत में एक भयंकर युद्ध अर्थात एक आत्मिक उलझन, स्वर्ग और पृथ्वी के बीच टकराव हुआ जिसमें शैतान द्वारा यीशु की परीक्षा ली गई।

यीशु को दिए गए प्रलोभनों का वर्णन ''परीक्षाएं'' के रूप में अच्छे ढंग से किया जाता है, क्योंकि प्रलोभन में भीतर की दुष्कामना होती है जो शैतान के निमन्त्रण को स्वीकार करती है (याकूब 1:10-12)। यद्यपि यीशु ने ऐसी कोई इच्छा नहीं जताई परन्तु उसकी परीक्षाएं हमें उसके मनुष्य होने की एक स्पष्ट तस्वीर दिखाती हैं। पवित्र आत्मा ने बाइबल में परीक्षाओं के तीन वृत्तांत रखे हैं (मत्ती 4:1-11; लूका 4:2-13; मरकुस 1:12, 13)।[1] मरकुस का वृत्तांत इतना संक्षिप्त है कि यह उन परीक्षाओं के वर्णन से अधिक उनका भ्रम लगता है, परन्तु मरकुस ने यह अवश्य बताया है कि यीशु वन पशुओं में था। अपने जीवन में यीशु कई बार परीक्षा में पड़ा था, परन्तु इस अवसर पर उससे पाप करवाने के लिए शैतान ने बहुत ही विशेष प्रयास किया होगा। शायद उसके उपवास रखने के सभी चालीस दिनों में उसकी परीक्षाएं होती रही थीं जिनमें सबसे कठिन परीक्षाएं इन दिनों के अन्त वाली थीं।[2]

प्रलोभन का यह अनुभव उसके बपतिस्मे के तुरन्त बाद हुआ था। मरकुस 1:12 कहता है, ''तब आत्मा ने तुरन्त उसको जंगल की ओर भेजा।'' जंगल में जाने की पहल[3] शैतानी नहीं बल्कि ईश्वरीय थी। ''यरदन पर स्वर्ग की स्वीकृति के पश्चात नरक की सेना आई; कबूतर के बाद शैतान।''[4] इसी प्रकार, नये मसीही को मसीह में बपतिस्मा लेने के तुरन्त बाद परीक्षाओं का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। नये मसीही तुझ पर परीक्षाएं आएंगी परन्तु जो नास्तिक हैं उन पर नहीं आएंगी।

लूका 14:13 कहता है कि इन परीक्षाओं के बाद शैतान ''कुछ समय के लिए उसके पास से चला गया।'' इसका अर्थ यह है कि इन घटनाओं के बाद यीशु को थोड़े समय के लिए परीक्षा लेने वाले से आराम मिला था। इसका यह अर्थ भी है कि इसके बाद भी शैतान यीशु की परीक्षा लेने के लिए आया था।

यीशु की परीक्षा क्यों हुई? यह ईश्वरीय योजना थी कि यीशु एक मनुष्य के रूप में संसार में आए और परीक्षा में पड़े। पवित्र शास्त्र यीशु की परीक्षा होने के दो मूल कारण देता है।

पहला, उसकी परीक्षा इसलिए हुई थी ताकि वह हमारे जीवन के संघर्षों से सहानुभूति रख सके (इब्रानियों 4:15; 2:15-18)। क्या इसका अर्थ यह है कि यीशु पर हर युग के पुरुषों तथा स्त्रियों के जीवन में आने वाली हर प्रकार की परीक्षा आई? स्पष्टतः, वह नहीं, परन्तु सैद्धांतिक रूप में उसके सामने वे सभी परीक्षाएं आईं जो हमारे सामने आती हैं। प्रलोभन ने पूरे ज़ोर से उसकी परीक्षा लेने का हर वह मार्ग अपनाया जिससे हमारी परीक्षा हो सकती है। इतनी कड़ी परीक्षा हमारी नहीं हुई है। जब पहली बार हमारी परीक्षा हुई थी, तो हमने इसके सामने सिर झुका दिया था। क्योंकि यीशु ने कभी भी परीक्षा के सामने अपने आपको झुकाया नहीं इसलिए उसे इसकी पूरी शक्ति का सामना करना पड़ा था। मान लीजिए आप एक धावक हैं जो कभी दौड़ में हारे नहीं थे। दौड़ समाप्ति के निकट आपको परीक्षा के पूरे ज़ोर का अहसास होगा। हमेशा हारने वाले को हारने की चिन्ता नहीं होती परन्तु जिसने कभी हार देखी न हो उसके लिए हार जाने की बात सोचना भी कठिन लगता है।

परीक्षाओं के आसपास की घटनाएं या परिस्थितियां अलग हो सकती हैं, परन्तु हर युग के सब पुरुषों तथा महिलाओं के लिए परीक्षा तो परीक्षा ही रहती है। मनुष्य प्रलोभन में केवल तीन कारणों से पड़ सकता है। वासना-शरीर की अभिलाषा; लोभ-आंखों की अभिलाषा; और महत्वाकांक्षा-जीविका का घमण्ड। दूसरे सभी प्रलोभन इन तीनों के केवल रूपांतर ही हैं। इसका अर्थ यह है कि यीशु की परीक्षा हमारी तरह ही उसकी मानवीयता के प्रत्येक भाग में हुई थी।[5]

फिर, उसकी परीक्षा इसलिए भी हुई थी कि वह अपने आपको एक सिद्ध उद्धारकर्त्ता के रूप में प्रमाणित करे (इब्रानियों 5:8, 9; 2:10)।[6] उसकी परीक्षा उसके चरित्र की परीक्षा के रूप में उसके लिए भी हुई थी (इब्रानियों 5:7-9)। उसकी परीक्षा हमारे लिए हुई थी ताकि वह हमारा एक ऐसा महायाजक और उदाहरण बन सके जो हमारी निर्बलताओं को जानता हो (इब्रानियों 4:15, 16)।

मसीह की परीक्षाओं में अद्‌भुत सच्चाइयां हैं। पहली तो, उनमें पाप और शैतान की वास्तविकता को पहले से माना जाता है।[7] शैतान केवल एक शक्ति ही नहीं बल्कि एक आत्मा है जो आपके आत्मा की खोज में है। ''शैतान'' के लिए मरकुस द्वारा प्रयुक्त इब्रानी शब्द का अनुवाद मत्ती और मरकुस में ''इब्लीस'' किया गया है। इसका अर्थ है ''बदनाम करने वाला या झूठा आरोप लगाने वाला।''

दूसरा, इसका अर्थ है कि यीशु पूर्णतया मनुष्य था। यदि वह पाप नहीं कर सकता था तो शैतान ने उसकी परीक्षा क्यों ली? उसे दिए गए प्रलोभनों से संकेत मिलता है कि वह पाप कर सकता था।[8]

तीसरा, वे प्रकट करते हैं कि पाप के प्रलोभन में पड़ना पाप नहीं है। हम प्रलोभन से बच नहीं सकते। मार्टिन लूथर ने कहा था, ''मैं अपने सिर पर पक्षियों को उड़ने से रोक नहीं सकता, परन्तु मैं उन्हें अपने बालों में घोंसला बनाने से रोक सकता हूं।''

आश्चर्यकर्म से जीतना बनाम इन्सान बनकर जीतना

यीशु की परीक्षा सबसे पहले शारीरिक कामना के क्षेत्र में हुई थी। ''कामना'' किसी वस्तु का आनन्द लेने की इच्छा को कहा जाता है।[9] यूहन्ना ने इसे ''शरीर की अभिलाषा'' (1 यूहन्ना 2:16) कहा है।

> वह चालीस दिन और चालीस रात निराहार रहा, अन्त में उसे भूख लगी। तब परखने वाले ने पास आकर उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो कह दे कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं। उस ने उत्तर दिया, लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा (मत्ती 4:2-4)।

पहली परीक्षा की परिस्थितियां क्या थीं? किसी ने कहा है, ''मानवीय सहानुभूति से दूर एकांत का स्थान पहली युद्ध भूमि के रूप में चुना गया था। यह एक प्राचीन युद्ध भूमि थी। मूसा समेत बहुत से इस्राएलियों को जंगल में पराजय का सामना करना पड़ा था।''

किसी और ने कहा है, ''पहले आदम ने पाप के द्वारा एक वाटिका को जंगल में बदल दिया, परन्तु दूसरे आदम ने पाप का विरोध करके जंगल को वाटिका में बदल दिया।''

शैतान जब पहला प्रलोभन लेकर यीशु के सामने आया था तो उस समय यीशु शारीरिक रूप से निर्बल था। उसने चालीस दिन तक और चालीस रात तक उपवास जो रखा था। शैतान आम तौर पर हमारे निर्बल होने पर ही वार करता है।

पत्थरों को रोटियां बनाने में क्या हानि होनी थी? शैतान यीशु से एक प्राकृतिक आवश्यकता को अप्राकृतिक ढंग से पूरा करने के लिए कह रहा था। वह यीशु से सचमुच की भूख को झूठे साधनों से संतुष्ट करने के लिए कह रहा था। यीशु को भोजन की आवश्यकता तो थी इसलिए शैतान ने शीघ्र भोजन प्राप्त करने का ढंग भी सुझाया था।

हम कह सकते हैं, ''उस सुझाव में क्या बुराई थी?'' यदि यीशु ने अपनी भूख इस प्रकार मिटाई होती, तो उसने एक स्वाभाविक आवश्यकता को चमत्कारी ढंग से संतुष्ट करने का दोषी होना था। परन्तु चमत्कारी शक्ति का उद्देश्य यह नहीं था (यूहन्ना 20:31)। पौलुस ने अपने ''शरीर में एक कांटा'' निकालने के लिए चमत्कारी शक्ति का इस्तेमाल नहीं किया था (2 कुरिन्थियों 12:7)। इपफ्रुदीतुस ने अपने आपको चमत्कारी शक्ति से चंगा नहीं किया था (फिलिप्पियों 2:25-27)। त्रुफिमुस ने भी प्राकृतिक कष्ट को दूर करने के लिए चमत्कारी शक्ति का इस्तेमाल नहीं किया था (2 तीमुथियुस 4:20)। यीशु मानवीय परीक्षा पर काबू पाने और मनुष्य बना रहने के लिए अपने ईश्वरीय स्वभाव का इस्तेमाल नहीं कर सकता था। यीशु अनुग्रह करने के लिए छोटा बन गया और मनुष्य अर्थात वास्तव में पूर्ण मनुष्य बना (फिलिप्पियों 2:5-7)। उसने प्रलोभन का सामना उसी स्तर पर किया था जिस पर सब मनुष्य करते हैं। वह पाप के लिए दुख केवल क्रूस पर ही सह सकता था। वह चमत्कार से पीड़ा को दूर करके मनुष्य नहीं बना रह सकता था। यदि भूख की अपनी तड़प को वह

चमत्कार से दूर कर देता, तो अपने उन सभी अनुयायियों के लिए निराशा का कारण बनता जिन्हें बिना किसी आश्चर्यकर्म की सहायता के अपनी मानवीय समस्याओं से निपटना जरूरी है।

अपनी उचित आवश्यकताओं को अनुचित तरीकों से पूरा करने का प्रयास करके मन की पीड़ा और निराशा को जन्म देने वाले हज़ारों लोगों के बारे में सोचना कठिन नहीं है।

इस प्रलोभन का निशाना मानवीय देह है। ऐवरेट एफ. हेरिसन ने कहा था:

> आने वाले दिनों में यीशु ने चेले बनने की शर्तों के रूप में अपने अनुयायियों से तर्कसंगत मांगें रखनी थीं। उन मांगों में मूल मांग अपने आप का इन्कार करने पर ज़ोर देने की थी। ऐसी शर्त रखने का अधिकार और इसके कथन की शक्ति परीक्षा के अनुभव से ही आती है। यीशु ने एक नमूना ठहरा दिया जो उसके पीछे आने की चाह रखने वालों द्वारा आगे बढ़ते रहना चाहिए। यदि हमारा प्रभु आज्ञा देकर रोटी उपलब्ध करवाने इस परीक्षा में पड़ जाता, तो खून पसीने से कमाई करके प्रतिदिन की रोटी कमाने वालों के लिए चेला बनने की बात ही न रहती। नि:स्वार्थपन दिखाने के अलावा यीशु उनसे यह नहीं कह सकता था, ''मुझ से सीखो।''[10]

यीशु ने इस परीक्षा पर कैसे काबू पाया? यीशु ने ''आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है'' (इफिसियों 6:17) से शैतान के साथ युद्ध किया था। हमारे प्रभु ने शैतान के लिए व्यवस्थाविवरण 8:3 में से उद्धृत किया। यह आयत दिखाती है कि मनुष्य केवल ''रोटी'' से ही जीवित नहीं है। यदि केवल रोटी से ही जीवित रह सकता, तो यीशु के लिए पत्थरों को रोटी बनाना पूरी तरह से वैध होना था। यीशु का एकमात्र ध्यान ''रोटी'' पर नहीं था। वह यहां परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए आया था। उसकी इच्छा पूरी करने में मनुष्य के रूप में रहना और मनुष्य के रूप में शैतान का सामना करना शामिल था।

परमेश्वर में भरोसा करके जीतना बनाम परमेश्वर को परीक्षा में डालकर जीतना

दूसरा क्षेत्र जिसमें यीशु की परीक्षा हुई थी, वह था महत्वाकांक्षा अर्थात पाने की इच्छा।[11] यूहन्ना ने इसे ''जीवन का अभिमान'' कहा है (1 यूहन्ना 2:16)।

> तब इब्लीस उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया। और उस से कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे, क्योंकि लिखा है, कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा; और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे, कहीं ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे। यीशु ने उस से कहा, यह भी लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर (मत्ती 4:5-7)।

दूसरी परीक्षा की क्या परिस्थियां थीं?[12] स्थान यरूशलेम नगर के मन्दिर का कंगूरा था। ''कंगूरा'' शब्द का अर्थ सम्भवत: ''खण्ड'' है। यह सम्भवत: दक्षिणी दल था जिसने दो सौ फुट नीचे किद्रोन की घाटी को अनदेखा कर दिया था। शैतान यीशु को इस खाई में कूदने के लिए कह रहा था, कि अपने आपको मन्दिर से गिराकर अपने पिता की प्रतिज्ञा का दावा करे। शैतान ने बहस की कि परमेश्वर उसकी सुरक्षा के लिए आत्मिक पैराशूट उपलब्ध करवा देगा और अपने इस निवेदन के समर्थन में उसने भजन 91:11 भी उद्धृत किया था।

इस परीक्षा में यीशु के लिए दो महत्वपूर्ण आकर्षण थे: अपने पिता की प्रतिज्ञा को प्रमाणित करने और लोगों में शीघ्र प्रसिद्धि पाने की इच्छा। यीशु से एक प्रदर्शन करने के लिए कहा जा रहा था जिससे एक ही झटके में देश पर नियन्त्रण और इसकी निष्ठा पा लेनी थी। यह एक मानसिक और आत्मिक प्रलोभन था।

मन्दिर से कूदने में क्या हानि होनी थी। जे. डब्ल्यू मैक्गार्वे ने कहा है:

> अपने आपको नीचे गिराने का अर्थ था, यीशु पिता से अपने पुत्र होने को प्रमाणित करने के लिए एक अनावश्यक अश्चर्यकर्म की मांग कर रहा है और इस प्रकार परमेश्वर का प्रेम अनावश्यक परीक्षा में पड़ जाता। जो लोग परमेश्वर की किसी आज्ञा या कर्त्तव्य की पुकार के बिना अपने आपको उलझन में डालते हैं वे उसके प्रेम की परीक्षा लेते हैं।[13]

शैतान ने पवित्र शास्त्र से उद्धृत किया, परन्तु उसने इसका सही इस्तेमाल नहीं किया था। वह परमेश्वर के वचन को ऐसा कुछ कहते हुए बता रहा था जो परमेश्वर ने नहीं कहा था। शैतान का दिमाग पवित्र शास्त्र से भरा पड़ा था जबकि हृदय पाप से। शैतान बाइबल से घृणा करता है परन्तु अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए वह इसका इस्तेमाल कर सकता है। पवित्र शास्त्र में से उद्धृत करना आसान है जबकि पवित्र शास्त्र क्या कहता है और उसकी शिक्षा को मानना अधिक कठिन है।

यीशु ने इस परीक्षा पर कैसे काबू पाया था? यीशु ने एक और आयत व्यवस्थाविवरण 6:16 की ओर ध्यान दिलाया। यीशु ने एक-एक करके प्रत्येक पद की व्याख्या की थी। पवित्र शास्त्र को पूरी तरह समझने के लिए, हमें बाइबल को वैसे ही समझना चाहिए जैसे बाइबल कहती है। यीशु ने पुराने नियम को एक इकाई के रूप में देखा: भजन संहिता का एक पद व्यवस्थाविवरण के एक पद के साथ मिलता-जुलता है। पुराने नियम के हमारे प्रभु द्वारा स्पष्ट इस्तेमाल से अधिक समर्थन की बात ढूंढ़ना असम्भव होगा। पवित्र शास्त्र का वह अंश जिसमें से यीशु ने उद्धृत किया था इस्राएल द्वारा परमेश्वर की परीक्षा लेने के बारे में है। लोग प्रभु की उपस्थिति और प्रावधान पर संदेह करके उसे परीक्षा में डाल रहे थे। यद्यपि इस्राएल के बारे में कहा जाता है कि उसने जंगल में चालीस वर्ष के दौरान परमेश्वर की दस बार परीक्षा ली थी, परन्तु एक घटना का ही विस्तार से वर्णन है जिसका सम्बन्ध मूसा से है और यीशु ने उसे उद्धृत किया।

यीशु ने अपने पिता की परीक्षा लेने से इनकार कर दिया। शैतान द्वारा उद्धृत पद यह

नहीं सिखाता था कि पुत्र चाहे कितना भी लापरवाह क्यों न हो परमेश्वर अपने पुत्र की हर हाल में रक्षा करेगा। यीशु ने शैतान द्वारा उद्धृत पद के महत्व की ओर संकेत करके इसकी उचित प्रासंगिकता बनाई।

समझौता करके जीतना बनाम क्रूस के द्वारा जीतना

यीशु की तीसरी परीक्षा महत्वाकांक्षा अर्थात सम्पत्तियां पाने की इच्छा में हुई।[14] यूहन्ना ने इसे ''आंखों की अभिलाषा'' (1 यूहन्ना 2:16) कहा।

> फिर शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उनका विभव दिखाकर उस से कहा, यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा। तब यीशु ने उस से कहा, हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर (मत्ती 4:8-10)।

इस परीक्षा की परिस्थितियां क्या थीं? यीशु को एक ऊंचे पहाड़ पर ले जाया गया था। इस ऊंचे स्थान से उसे (लूका के अनुसार ''पल भर में'') संसार के सारे राज्य दिखाए गए थे। शैतान ने कहा था कि यदि यीशु झुक कर केवल उसकी उपासना करे तो ये सभी राज्य उसे दे दिए जाएंगे। शैतान का संसार में कोई राज्य नहीं था, परन्तु वे उसके नियन्त्रण में थे। यह नहीं कहा गया कि यीशु ने संसार के राज्य *देखे* बल्कि यह कहा गया है कि उसे राज्य *दिखाए गए थे।* शैतान ने केवल राज्यों की दिशाओं की ओर संकेत करके उनके बारे में बताया हो सकता है अर्थात यह काल्पनिक हो सकता है। यह परीक्षा अदन की वाटिका में हव्वा की परीक्षा जैसी ही है। यीशु ने संसार के राज्यों को वैसे ही देखा जैसे वृक्ष के फल को पाने की इच्छा से हव्वा ने देखा था।

उसका क्या नुक्सान था। शैतान यीशु को ऐसी बुराई करने के लिए कह रहा था जिससे भलाई निकल सके। शैतान कह रहा था, ''तू जगत को जीतने के लिए आया है। तू यदि केवल मेरी उपासना करे तो मैं तेरी सहायता करूंगा। विचार करो कि मेरे साथ लड़े बिना तुम संसार पर कितनी जल्दी विजय पा सकते हो।'' यीशु को अपने आत्मिक लक्ष्यों को पाने के लिए समझौता करने का निमन्त्रण दिया गया था। जे. ओसवल्ड ने कहा है,

> यीशु सचमुच सारे संसार की शक्ति और महिमा पाने के लिए आया था, परन्तु उसके लिए इसे अपने पिता के ढंग से अपने पिता के समय पर पाना भी आवश्यक था। और उसके पिता के ढंग में क्रूस पर उसकी मृत्यु आवश्यक थी। ... शैतान ने अपनी अन्तिम परीक्षा उसके साथ समझौता करके *क्रूस को निकालने की सम्भावना पर* केन्द्रित रखी।[15]

यीशु ने इस परीक्षा पर विजय कैसे पाई? यीशु ने शैतान को स्मरण दिलाया कि आराधना केवल परमेश्वर की ही होनी चाहिए (मत्ती 4:10)। उसने पुन: पुराने नियम के शास्त्रों से व्यवस्थाविवरण 6:13 को उद्धृत किया। संसार पर विजय पाने का शैतान का ढंग परमेश्वर के ढंग से बिल्कुल अलग था। शैतान से हाथ मिलाने से पहले, यीशु के लिए उन सभी आत्मिक सिद्धांतों से समझौता करना आवश्यक था जिन पर उसका राज्य स्थिर होना था। यीशु एक आत्मिक राज्य स्थापित करने के लिए आया था न कि सांसारिक। वह शैतान द्वारा सुझाए गए ढंग से शीघ्र ही संसार के सभी राज्यों पर नियन्त्रण पा तो सकता था, परन्तु ऐसा नियन्त्रण सच्चाई और धार्मिकता की कीमत देकर पाया जाता। उसने अपने पिता की इच्छा के प्रति वफ़ादार होकर और क्रूस के मार्ग से संसार पर विजय पाना चुना।

परीक्षा पर यीशु की विजय में, हम स्पष्ट और बिना किसी गलती के यीशु के मनुष्य होने को देखते हैं। वह सचमुच में मनुष्य बना।

पाद टिप्पणियां

[1]परम्परा के अनुसार परीक्षाएं कुरंटनिया पर्वत में हुईं जो यहूदिया के मैदान से बाहर, यरदन घाटी के पन्द्रह सौ फुट ऊपर है। यह यरदन और यरीहो के पश्चिम में बपतिस्मे के परम्परागत स्थान से छह या आठ मील दूर है जो लूका की अभिव्यक्ति ''यरदन से लौटा'' से मेल खाता है। यरीहो से यरूशलेम को जाने वाले पहाड़ी मार्ग को लहू की चढ़ाई कहा जाता था, क्योंकि इस मार्ग में लुटेरे हमला करते रहते थे। इस मार्ग के साथ-साथ यीशु पहाड़ पर जाता था, जिसकी चोटियां पश्चिम में यरूशलेम तक, पूर्व में यरदन घाटी और मोआब के मैदानों तक और उत्तर में हरमोन तक फैली हुई थीं। ''संसार के सभी राज्यों'' को जाने वाले राजमार्ग भी दिखाई देते थे (जे. डब्ल्यू. शेफ़र्ड, *द क्राइस्ट ऑफ़ द गॉस्पल्स* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशी: Wm. B. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1939], 73)। [2]जे. ऑसवल्ड सैन्डर्स का दावा था कि ये तीन परीक्षाएं केवल उन चालीस दिनों में उसके पवित्र मन पर शैतान की परीक्षाओं का नमूना ही थीं। उसका कहना है कि यह ''वह चालीस दिन, और चालीस रात, निराहार रहा, *अन्त में उसे भूख लगी*'' (मत्ती 4:2) से लिए गए शब्द लगते हैं। ''पूरे चालीस दिन उसकी परीक्षा होती रही परन्तु वह अपने आत्मिक संकट में इस प्रकार फंसा हुआ था कि उसे खाने का भूल ही गया। चालीस दिनों के अन्त में जाकर उसे कहीं भूख लगी। फिर उसके बाद उसकी तीन प्रतीकात्मक परीक्षाएं हुईं।'' शायद सैन्डर्स अपनी इस बात को प्रमाणित न कर पाया। देखिए जे. ऑसवल्ड सैन्डर्स, *द इनकम्पेयरेबल क्राइस्ट* (शिकागो: मूडी प्रैस, 1952), 58. डोनाल्ड गुथरी ने लिखा है, ''मत्ती और लूका द्वारा उल्लेखित तीन परीक्षाओं को संपूर्ण नहीं बल्कि उदाहरण के रूप में माना जाना चाहिए। वे आती रहने वाली परीक्षाओं के साथ का मार्ग हैं'' (डोनाल्ड गुथरी *ए शॉर्टर लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशी: ज़ोन्डर्वन, 1970], 81)। [3]अंग्रेज़ी के नये नियम में इस्तेमाल हुए ''desert'' या ''wilderness'' शब्द से इसे रेत का ढेर समझने की आवश्यकता नहीं, बल्कि इसके लिए हिन्दी के नये नियम में प्रयुक्त शब्द ''जंगल'' को सामान्य निवास से कुछ दूरी पर किसी स्थान के रूप में समझना चाहिए (मरकुस 1:35)। [4]सैन्डर्स, 57. [5]सैन्डर्स, 58. [6]हमें कितना धन्यवाद करना चाहिए कि यीशु ने पाप से इन्कार कर दिया! [7]बहुत अधिक सम्भावना है किशैतान यीशु के पास लाल कपड़े पहन कर हाथ में पंजा या कांटा लेकर नहीं आया था। सम्भवत यीशु की परीक्षा वैसे ही हुई थी जैसे हमारी परीक्षा होती है। यह बड़ा युद्ध उसकी व्यक्तिगत सेवकाई के आरम्भ होने से पहले हुआ था। शैतान के लिए यह बहुत बड़ा अवसर था। [8]इन तीनों परीक्षाओं का लिखा जाना हमें दिखाता है कियीशु ने आम लोगों के जीवन में आने वाली परीक्षाओं का सामना किया था और पूरी तरह से उनका मुकाबला किया था। इन परीक्षाओं को

समझना प्रत्येक मसीही के लिए बहुत लाभदायक होगा। इससे इस तथ्य का अहसास बढ़ना चाहिए कि यीशु सिद्ध तथा पाप से स्वतन्त्र था। इससे मसीह के आगमन में दिखाई गई उसके बलिदान का महत्व भी हमें समझ आ जाना चाहिए। इन परीक्षाओं में, हम संसार के इतिहास में केवल उस एक मनुष्य को देख रहे हैं जिसने शैतान का सामना कर उसे पूरी तरह से पराजित कर दिया था। [9]सैन्डर्स, 58. [10]एवरेट एफ. हैरिसन, *ए शॉर्ट लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: Wm. B. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1968), 87.

[11]सैन्डर्स, 59. [12]मत्ती के वृत्तांत में यह दूसरी और लूका के वृत्तांत में यह तीसरी परीक्षा है। [13]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंड्लटन, *द .फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल* (सिंसीनटी, ओहियो: द स्टेण्डर्ड पब्लिशिंग फाऊंडेशन, पृ.न.), 96. [14]सैन्डर्स, 60. [15]वही।

मसीही लोगों की उदारता से ट्रुथ फ़ॉर टुडे वर्ल्ड मिशन स्कूल बिना कोई कीमत लिए ये पुस्तकें आपको उपलब्ध करवा सका है। अपनी mailing list को अपडेट करने के लिए हमें आपसे निम्न जानकारी चाहिए।

यह पुष्टि करने के लिए कि आपकी जानकारी अभी भी सही है, कृपया हमें साल में कम से कम एक बार अवश्य लिखें कि क्या आपको यह सामग्री लगातार सही पते पर मिल रही है और आपके लिए कैसे सहायक हो रही है। आपकी सेवकाई में परमेश्वर आपको आशीष दे।

एक पर टिक करें: ☐ पुरुष ☐ स्त्री

(नोट: सम्भव हो तो पता अंग्रेज़ी के बड़े अक्षरों में लिखें)

नाम: _____

पूरा पता: _____

_____

_____ PIN _____

पुराना पता (पता बदलने की स्थिति में): _____

_____

_____

_____ PIN _____

ई-मेल पता: _____

कलीसिया का नाम: _____

स्थान: _____

प्रचारक का नाम: _____

जिस मण्डली में आप आराधना करते हैं, वहां आपकी सेवा क्या है?

☐ प्रचारक ☐ सदस्य

☐ बाइबल क्लास टीचर ☐ सदस्यता नहीं

क्या आपको ट्रुथ फ़ॉर टुडे वर्ल्ड मिशन स्कूल का साहित्य लगातार मिल रहा है? (एक पर टिक करें):

☐ नहीं

☐ हां, डाक से

☐ हां, श्री _____ के पास से।

आप किस भाषा में पुस्तकें पाना चाहेंगे? (केवल एक ही टिक करें):

☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ तेलुगू ☐ अंग्रेज़ी

आप इस सामग्री का इस्तेमाल कैसे करते हैं/करेंगे? _____

_____

यदि आप ऐसे व्यक्तियों को जानते हों जो इस सामग्री को लगातार प्राप्त करना चाहते हैं, तो कृपया इस फार्म की कापी करवाकर उनके नाम से यह फार्म Truth for Today, P.O. Box 44, Chandigarh - 160017 के पते पर भेज दें।